



CDS - OTA



UPSC

COMBINED DEFENCE SERVICES

सम्मिलित रक्षा सेवा

भाग - 2

भारत का इतिहास, कला - संस्कृति

एवं राज्यव्यवस्था



भारत का इतिहास

प्राचीन भारत का इतिहास

अध्याय	पृष्ठ संख्या
(1) सिन्धु घाटी सभ्यता	1
(2) वैदिक काल (साहित्य)	5
(3) धार्मिक आन्दोलन (बौद्धधर्म एवं जैन धर्म)	10
(4) महाजनपद काल	17
(5) विदेशी आक्रमण	18
(6) मौर्य वंश	19
(7) मौर्योत्तर काल	26
(8) गुप्त वंश	30
(9) गुप्तकालीन प्रशासनिक व सामाजिक व्यवस्था	32

मध्यकालीन भारत का इतिहास

(1) इस्लाम एवं शासक	45
(2) भारत पर अरब आक्रमण	46
(3) सल्तनत काल (गुलाम वंश)	47
(4) खिलजी वंश	49
(5) तुगलक वंश	52
(6) सैय्यद वंश	54
(7) लोदी वंश	55
(8) सल्तनतकालीन प्रशासन एवं स्थापत्य कला	55
(9) मुगल काल	59
(10) मुगलकालीन प्रशासन एवं कला	68
(11) विजयनगर साम्राज्य	74
(12) बहमनी साम्राज्य	77
(13) शूफीवाद	78
(14) प्रमुख आंदोलन	80
(15) मराठा	83

आधुनिक भारत का इतिहास

(1) भारत में यूरोपीय शक्तियों का आगमन	85
(2) बंगाल एवं प्लासी का युद्ध	90
(3) लॉर्ड वैलेजली की सहायक संधि प्रथा एवं भू-राजस्व पद्धतियां	99
(4) भारत के गवर्नर जनरल एवं उनके कार्य	110
(5) भारत के वायसराय एवं उनके कार्य	115
(6) 1857 की क्रांति	118
(7) भारत के अन्य विद्रोह	122
(8) सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आन्दोलन	127
(9) राष्ट्रीय आन्दोलन	131
(10) 1909 का भारत परिषद् अधिनियम (मार्ले-मिंटो सुधार)	137
(11) राष्ट्रीय आन्दोलन का तृतीय चरण (1919-1947)	139
(12) भारत सरकार अधिनियम - 1935	149
(13) भारत छोड़ो आन्दोलन	152
(14) भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 1947	155
(15) भारत में क्रांतिकारी आन्दोलन	155
(16) प्रमुख व्यक्तित्व	163
(17) भारत का शैक्षणिक विकास	164

भारतीय कला एवं संस्कृति

(1) भारतीय संस्कृति का परिचय	167
(2) विशासत	167
(3) इण्डो इस्लामिक स्थापत्य कला	173
(4) शिल्पकला	176
(5) मूर्तिकला	176
(6) वस्त्रनिर्माण	177
(7) चित्रकला	178
(8) नृत्यकला	182
(9) रंगमंच	186

भारत का संविधान

(1) संविधान की पृष्ठभूमि एवं संविधान सभा	190
(2) भारतीय संविधान के स्रोत	191
(3) अनुसूचियाँ एवं भाग	192
(5) प्रस्तावना	193
(6) भाग - 1 संघ एवं उसके राज्य क्षेत्र	195
(7) मूल अधिकार	197
(8) राज्य के नीति निर्देशक तत्व	206
(9) मौलिक कर्तव्य	207
(10) संघ की कार्यपालिका	210
A. राष्ट्रपति	
(11) उपराष्ट्रपति	215
(12) मंत्रिमण्डल	217
(13) संसद	218
(14) भारत का नियंत्रक एवं महालेखा परिक्षक	229
(15) राज्य की कार्यपालिका (भाग-6)	230
A. राज्यपाल	
(16) राज्य का विधानमंडल	232
(17) सर्वोच्च न्यायालय	232
(18) उच्च न्यायालय	235
(19) आपातकालीन उपबंध	238
(20) केन्द्र एवं राज्य सम्बन्ध	243
(21) पंचायतीराज	247
(22) संविधान की विशेषताएं एवं संशोधन (अनुच्छेद 368)	249
(23) संवैधानिक एवं गैर संवैधानिक आयोग	253
(24) नागरिकता	257
(25) प्रधानमंत्री	259

प्राचीन भारत का इतिहास



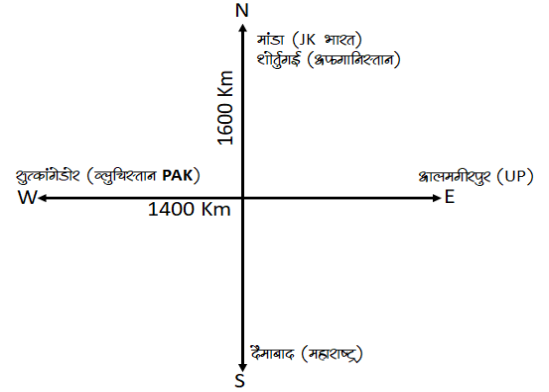
कालक्रम

1. 2600 BC	1900 BC	सिन्धुघाटी सभ्यता
2. 1900 BC	1500 BC	-----
3. 1500 BC	1000 BC	ऋग्वैदिक काल
4. 1000 BC	600 BC	उत्तरवैदिक काल
5. 600 BC	321 BC	महाजनपद काल (बौद्ध, जैन)
6. 321 BC	184 BC	मौर्य काल
7. 184 BC	321 AD	मौर्योत्तर काल
8. 319 AD	550 AD	गुप्तकाल
9. 606 AD	647 AD	हर्षवर्द्धन
10. 750 AD	1000 AD	राजपूत काल
11. 1192 (1206) - 1526 AD		सल्तनत काल
12. 1526 AD	1707 (1858)	मुगल काल
13. 1707 (1757) - वर्तमान		आधुनिक काल

1. सिन्धु घाटी सभ्यता

- इसे "हडप्पा सभ्यता" भी कहा जाता है।
- यह कांस्ययुगीन सभ्यता थी।
- यह विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है। उत्कृष्ट नगर व्यवस्था एवं जल निकासी व्यवस्था इसको विशिष्ट बनाती है।
- चार्ल्स मैशन - 1826 ई. सबसे पहले सभ्यता की ओर ध्यान आकर्षित किया।
- जॉन बर्टन व विलियम बर्टन - 1856 ई हडप्पा नगर का खोज किया।
- सर जॉन मार्शल (ASI - महानिदेशक) - 1921 ई पूर्व इनहोंने दयाशम साहनी को हडप्पा में उत्खनन करने के लिए नियुक्त किया।
- कालक्रम - 2600 से 1900 B.C. (New Ncert)
रेडियो कार्बन (C¹⁴)
2250 से 1750 B.C. (Old Ncert)

• विस्तार -



- पिग्गत ने हडप्पा एवं मोहनजोदड़ो को सिन्धु सभ्यता की जुड़वा राजधानी बताया है।
- घोलावीरा एवं राखीगढ़ी भारत में सबसे पुराने स्थल हैं।
- आजादी के समय अधिकांश पुरास्थल पाकिस्तान में चले गये।
- बड़े नगर (पाकिस्तान)
गनेडीवाल
हडप्पा
मोहनजोदड़ों

नगर नियोजन -

- उत्कृष्ट नगर व्यवस्था सिन्धु घाटी के समकालीन सभ्यताओं में इस विशेषता का अभाव।
- नगर ग्रिड पद्धति पर आधारित थे अर्थात् शतरंज के बोर्ड की तरह सभी नगरों को बनाया था। सभी मार्ग समकोण पर काटते थे।
- सबसे चौड़ी सड़क 34 फिट की मिलती है जो सम्भवतः राजमार्ग रहा होगा।
- घरों में उत्कृष्ट नाली व्यवस्था (जल निकासी हेतु)
- बड़ी नालियों को ढक कर रखते थे।
- भवन के अन्दर सामान्यतः 3 या 4 कक्ष, रसोईघर, 1 विद्यालय स्नानागार एवं कुआँ होता था।
- कालीबंगा से अलंकृत ईंटें प्राप्त होती हैं। कच्ची एवं पक्की ईंटों का प्रयोग करते थे। ईंट का आकार - 1 : 2 : 4
- कालीबंगा से लकड़ी की नालियों के शक्य मिलते हैं।
- नगर 2 भागों में बाँटा हुआ होता था। पहला भाग - दुर्गिकृत होता था (शासक वर्ग)

तथा दूसरा भाग सामान्य । (मजदूर, कारीगर, व्यापारी आदि)

● राजनीतिक व्यवस्था: -

ज्यादा जानकारी नहीं है । सम्भवतया पुरोहित राजा (Prist King) या व्यापारी वर्ग के हाथ में शासन व्यवस्था रही होगी पिग्मट ने ----- जुड़ा राजधानी ---- ।

● आर्थिक व्यवस्था - कृषि

- खेती व्यवस्था - प्रमुख कार्य
- कालीबंगा से जुते हुए खेतों के साक्ष्य मिले हैं । एक साथ दो - दो फसल बोने के साक्ष्य मिले हैं (कालीबंगा)
- गेहूँ मटर, जौ, तिल, मोटा अनाज (ज्वार), रागी का प्रयोग करते थे ।
- उत्तर हडप्पा काल में चावल के साक्ष्य भी मिलते हैं । लोथल से चावल के दाने एवं रंगपुर से चावल की भूसी मिली है ।
- रिंयाई (कुँओ एवं) नदियों के माध्यम से होती थी ।
- नहरों के साक्ष्य भी मिलते हैं - शौरुगई (AF) (OXUS नदी के किनारे स्थित)
- धौलावीरा से कृत्रिम जलाशय के साक्ष्य मिले हैं । सम्भवतः नहरों के माध्यम से रिंयाई करते थे ।
- अधिशेष उत्पादन (Surplus Production) होता था । हडप्पा तथा मोहनजोदड़ो से विशाल अनागर के साक्ष्य मिलते हैं ।

पशुपालन

- बैल, भैंस, बकरी, भेड़, खरगोश, कुत्ता आदि पालतु पशु थे ।
- मोहरों पर कूबड वाले बैल का अंकन बहुत अधिक मिलता है ।
- घोड़े एवं ऊँट से ज्यादा परिचित नहीं थे । सुरकोटडा से घोड़े की अस्थियाँ मिलती हैं ।

उद्योग

- चुम्बुदड़ों एवं लोथल से मनके बनाने का कारखाना मिलता है ।
- चाक पर बर्तन बनाने का कार्य होता था ।
- बर्तनों को आग से पकाते भी थे ।
- भट्टे के साक्ष्य भी मिलते हैं । कच्ची व पक्की ईंटों का प्रयोग होता था ।
- लकड़ी के कारखाने भी थे ।

- सोना, चाँदी, ताँबा, टिन आदि से परिचित थे । (ताँबा + टिन = कांस्य)
- बहुमूल्य पत्थर "कार्नेलियोन" का प्रयोग भी करते थे

धार्मिक स्थिति - (धार्मिक जीवन)

- बहुदेववाद में विश्वास रखते थे ।
- मूर्तिपूजा करते थे ।
- मन्दिरों के साक्ष्य नहीं मिलते ।
- अग्निकुण्ड प्राप्त होते हैं ।
- मातृदेवियों की मूर्तियाँ मिलती हैं ।
- पशुपतिनाथ की मोहर प्राप्त होती है । इस मोहर पर बाघ, हाथी, बैल, गैंडा व हिंरण के चित्र मिलते हैं सर जॉन मार्शल ने सर्वप्रथम इसे पशुपतिनाथ कहा था ।
- आत्मा की अमरता में विश्वास रखते थे ।
- हडप्पा से स्थायिक का चिह्न प्राप्त होता है ।
- लिंगपूजा, यौनिपूजा, वृक्ष पूजा में विश्वास रखते थे ।
- बलि प्रथा का अनुमान भी - जैसे - चम्बुदड़ों की मुहर पर बलि के दृश्य
- वृक्ष, पशु, साँप, पक्षी आदि की भी पूजा, सूर्य पूजा
- पुनर्जन्म में विश्वास - 3 तरह के दाह संस्कार
- हडप्पा से एक मृणमूर्ति के गर्भ से एक पौधा निकला दिखाया गया है, जो उर्वरता की देवी का प्रतीक है

सामाजिक स्थिति: -

- मातृसत्तात्मक संयुक्त परिवार होते थे ।
- समाज संभवतः 4 भागों में विभाजित था -
 - (i) पुरोहित वर्ग
 - (ii) व्यापारी वर्ग
 - (iii) किसान वर्ग
 - (iv) श्रमिक वर्ग
- बड़ी मात्रा में मातृदेवियों की मूर्ति मिलती है ।
- यह शान्तिप्रिय लोग थे क्योंकि अत्यन्त कम मात्रा में हथियार मिलते हैं ।
- पुरुष एवं महिलाएँ शृंगार करते थे एवं जवाहरात पहनते थे ।
- लोग शाकाहारी व माँसाहारी थे ।
- शतरंज एवं मुर्गे की लड़ाई इनके प्रिय खेल थे ।
- अन्तिम संस्कार की तीनों विधियों का प्रचलन था -
 - (i) पूर्ण शवाधान
 - (ii) आंशिक शवाधान
 - (iii) दाह संस्कार
- यह आत्मा व पुनर्जन्म में विश्वास करते थे ।

- लोथल से 3 व कालीबंगा से एक युग्मित शवाधान मिलता है ।

आर्थिक स्थिति/व्यापार: -

- कृषि आधारित अर्थव्यवस्था थी ।
- अधिशेष उत्पादन होता था जिन्हे बड़े बाजारों/शहरों में बेचा जाता था ।
- गेहूँ, सरसों, चना, मटर, रागी प्रमुख फसलें थी ।
- इन्हें चावल एवं बाजरे का ज्ञान नहीं था ।
- लोथल से चावल के साक्ष्य मिलते हैं ।
- रंगपुर से चावल की भूरी मिलती है ।
- रंगपुर उत्तर हडप्पा स्थल है ।
- शोर्तुगई (अफगानिस्तान) Oxus River के किनारे से नहरों के साक्ष्य मिलते हैं ।
- धौलावीरा से जलाशय के साक्ष्य मिलते हैं ।
- यह पशुपालन भी करते थे ।
- गाय, भैंस, भेड़, बकरी, खरगोश, कुत्ता एवं बिल्ली इनके प्रिय पशु थे ।
- यह ऊँट, घोडा, हाथी से परिचित नहीं थे ।
- विदेशी व्यापार होता था ।
- सारगोन अभिलेख में शिन्धु घाटी सभ्यता को "मेलुहा" कहा गया है ।
- मेलुहा हाजा (मोर) पक्षी के लिए प्रसिद्ध है ।
- सारगोन अभिलेख में कपास को सिण्डन कहा गया है
- कपास की विश्व में प्रथम खेती भारत में हुई ।
- दिल्ली (बहरीन) व आखन (ओमान) मध्यस्थ का कार्य करते थे ।
- मुद्रा व्यवस्था का प्रचलन नहीं था ।
- वस्तु विनिमय होता था ।
- यह सोने व चाँदी का प्रयोग करते थे ।
- लोहे से परिचित नहीं थे ।
- ताँबा + टिन = कांशय
- बालाकोट (PAK) से शंख उद्योग के अवशेष मिलते हैं ।
- माप की दशमलव प्रणाली
- भारत को नाविकों का देश कहा

मूर्तियों एवं मुहरें: -

- यहाँ से 3 तरह की मूर्तियाँ मिलती हैं -
 1. धातु की
 2. पत्थर की
 3. मिट्टी की (टेशकोटा)
- मोहनजोदड़ो से नर्तकी की मूर्ति (धातु की)
- दैमाबाद से धातु का स्तंभ
- मोहनजोदड़ो से पत्थर की पुरोहित राजा की मूर्ति

- टेशकोटा की मातृदेवियों की मूर्तियाँ
- ज्यादातर मुहरें शैलखडी की बनी हुई हैं ।
- ज्यादातर मुहरें चौकोर हुआ करती थी ।
- मुहरे वस्तुओं की गुणवत्ता एवं व्यक्ति की पहचान की द्योतक होती थी ।
- (I) मुहरों पर एकशिंगा (एकशृंगी - सबसे ज्यादा)
- मोहनजोदड़ो व हडप्पा से बड़ी मात्रा में मुहरें प्राप्त होती हैं ।
- (II) कूबड वाला शांड के चित्र

1. हडप्पा: -

- पाकिस्तान के पंजाब के मोंटगोमरी जिले में स्थित (अब - शाहीवाल जिले में) रावी नदी के तट पर
- उत्खननकर्ता - दयाशम शाहनी
- रावी नदी के तट पर श्रमिकों के आवास एवं अन्नानागर मिलते हैं ।
- R-37 नामक कब्रिस्तान मिलता है । एक शव को ताबूत में दफनाया गया है, इन्से विदेशी की कब्र कहते हैं ।
- यहाँ से इक्का गाडी प्राप्त होती है । (पश्चिम में विशाल दुर्ग)
- शृंगार पेटी प्राप्त होती है ।
- टीले पर निर्मित - व्हीलर ने "माउण्ट A-B" कहा ।

2. मोहनजोदड़ो : -

स्थिति = लरकाना (शिन्धु, PAK)
 शिन्धु नदी के तट पर
 उत्खननकर्ता = राखालदास बनर्जी
 मोहनजोदड़ो का शाब्दिक अर्थ = मृतकों का टीला (शिन्धी भाषा)

(i) विशाल स्नानागार -

- (a) आकार :- 39×23×8 ft
- (b) इसके उत्तर व दक्षिण में सीढियाँ बनी हुई हैं
- (c) इसमें बिटुमिनस का लेप किया गया है ।
- (d) इसके उत्तर दिशा में 6 वस्त्र बदलने के कक्ष हैं ।
- (e) तीन तरफ बरामदे हैं ।
- (f) बरामदे के पीछे कई कक्ष बने हुए हैं ।
- (g) जलापूर्ति हेतु कुँआ भी बना हुआ है ।
- (h) सीढियों के साक्ष्य भी मिलते हैं ।
- (i) प्रथम तल पर सम्भवतया पुरोहित रहते होंगे ।
- (j) सम्भवतया यहाँ धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन किया जाता रहा होगा ?

(k) शर जॉन मार्शल ने इसे तात्कालिक समय की आश्चर्यजनक इमारत कहा है।

- (ii) विशाल श्रमनागर
- (iii) महाविद्यालय के शाक्ष्य
- (iv) शूती कपडे के शाक्ष्य
- (V) हाथी का कपालखण्ड
- (vi) नर्तकी की मूर्ति जो धातु की बनी हुई है।
 - (a) यह नग्न है।
 - (b) इसने एक हाथ में चूडियाँ पहन रखी है।
- (vii) पुरोहित राजा की मूर्ति जो ध्यान की अवस्था में है
 - (a) इसने शॉल श्रोत रखी है जिस पर कशीदाकाशी का कार्य किया गया है।
- (viii) यहाँ से मेसोपोटामिया की मुहर मिलती है।

3. लोथल :-

स्थिति = गुजरात

- भोगवा नदी के किनारे
 - उत्खननकर्ता = S. R. राव (रंगनाथ राव)
 - यह एक व्यापारिक नगर था।
 - (i) यहाँ से गोदीवाडा (Dockyard) मिलता है
 - (a) यह शिन्धु घाटी सभ्यता की सबसे बड़ी कृति है।
 - (ii) मनके (Bead) बनाने का कारखाना
 - (iii) चावल के शाक्ष्य
 - (iv) फारस की मुहर जो गोलाकार बटननुमा है
 - (v) घोडे की मृण्मूर्तियाँ
 - (vi) चक्की के दो पाट
 - (vii) घरों के दरवाजे मुख्य मार्ग पर खुलते हैं (एकमात्र)
 - (viii) छोटे दिशा सूचक यंत्र

4. सुरकोटडा / सुरकोटदा: -

स्थिति = गुजरात

- (i) घोडे की हड्डियाँ
- शिन्धु घाटी सभ्यता के लोगो को घोडे का ज्ञान नहीं था।

5. कुनाल (HR)

- चाँदी के दो मुकुट

6. शेजदी (गुजरात)

- हाथी के शाक्ष्य

7. शेपड (PB)

मनुष्य के साथ कुते को दफनाने के शाक्ष्य

8. धौलावीरा

गुजरात - कच्छ जिला (किती नदी तट पर नहीं)
 उत्खननकर्ता - रविन्द्र सिंह विष्ट (1990 में)

- यह सबसे नवीन नगर है जिसका उत्खनन किया गया।
- कृत्रिम जलाशय के शाक्ष्य। संभवतः नहरों के माध्यम से खेती करते होंगे। (दुर्गाभाग, मध्यम नगर, निचला)
- यह नगर 3 भागों में बंटा हुआ था।
- स्टेडियम एवं सूचना पट्ट के अवशेष मिलते हैं। (खेल का मैदान)
- शिन्धु लिपि के 10 बडे चिह्नों से निर्मित शिलालेख

9. चन्हुदडी

उत्खननकर्ता - एन. मजूमदार (डाकूश्री ने हत्या कर दी) - क्रैस्ट मैके

- मनके बनाने के कारखाने (मणिकारी), मुहर बनाने का काम आदि।
- श्रौद्योगिक नगर
- कुते द्वारा बिल्ली का पीछा करने के शाक्ष्य मिले।
- वक्राकार ईटे मिली है।

10. देमाबाद

- स्थ मिले हैं।

हडप्पा लिपि

- लगभग 64 मूल चिह्न व 400 तक अक्षर
- इन्हें लिपि का ज्ञान था
- दायी से बायीं ओर लिखते थे।
- गोमूत्राक्षर लिपि एवं भाव-चित्रात्मक लिपि थी।
- 375 से 400 तक भाव एवं शब्दों का प्रयोग करते थे।
- एक लेख पर सर्वाधिक 16 शब्द व भावों का प्रयोग किया गया है।
- मछली का प्रयोग Max तथा "U" आकार भी अधिक

पतन के कारण

- गार्डन चाइल्ड तथा व्हीलर के अनुसार आर्यों का आक्रमण
- रंगनाथ राव तथा सर जॉन मार्शल - बाद
- लोम्बार्डिक-सिंधु नदी का मार्ग बदलता
- आस्ट्राईन एवं क्रमलानंद घोष-जलवायु परिवर्तन
- जॉन मार्शल-प्रशासनिक शिथिलता

निष्कर्ष

हडप्पा या सिंधुघाटी सभ्यता एक विशाल व विस्तृत सभ्यता थी, अंततः इसके पतन के लिए कोई एक कारण उत्तरदायी नहीं हो सकता है।

प्राचीन श्रवणेशो के अध्ययन से ज्ञात होता है कि अपने अंतिम समय में यह पतनोन्मुख रही। अंततः द्वितीय सहस्राब्दी ई.पू. के मध्य इस सभ्यता का पूर्णतः विनाश हो गया। इस सभ्यता का क्रमिक पतन हुआ तथा यह नगरीय सभ्यता से ग्रामीण सभ्यता में पहुंच गयी।

2. वैदिक काल (साहित्य)

1500 - 600 BC

- | | | |
|---|---|---------------|
| 1. वेद ⇒ श्रुति
2. ब्राह्मण ⇒
3. आरण्यक ⇒
4. उपनिषद् ⇒ वेदान्त | } | वैदिक साहित्य |
|---|---|---------------|

- | | | |
|---|---|-------------------------------|
| (1) वेदांग
(2) धर्मशास्त्र
(3) महाकाव्य
(4) पुराण
(5) स्मृतियाँ | } | वैदिक साहित्य का अंग नहीं है। |
|---|---|-------------------------------|

वेद -

- वेद का शाब्दिक अर्थ ज्ञान होता है।
- वेदों का संकलन कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास ने किया।
- वेदों की रचना आर्यों ने की।
- आर्य का शाब्दिक अर्थ = श्रेष्ठ/कुलीन
- वेदों का नित्य, प्रामाणिक एवं अपौरुषेय माना जाता है

- वैदिक मंत्रों की रचना करने वाले ब्राह्मणों को दृष्टा कहते हैं।
- वैदिक मंत्रों की रचना करने वाली महिलाओं को ऋषि कहा जाता था।
- वेद 4 हैं -

1. ऋग्वेद -

- ऋग्वेद में 10 मण्डल, 1028 सूक्त, 10580(10600) मंत्र हैं।
- पहला एवं 10वाँ मण्डल बाद में जोड़े गए हैं।
- दूसरे से लेकर सातवें मण्डल को वंश मण्डल /परिवार मण्डल कहा जाता है।
- तीसरे मण्डल में गायत्री मंत्र का उल्लेख मिलता है।
 - गायत्री मंत्र की रचना विश्वामित्र ने की।
 - गायत्री मंत्र सवितृ / सावितृ (सूर्य) को समर्पित है।
- सातवें मण्डल में दशराज्ञ/ दशराजन युद्ध का उल्लेख मिलता है।

भरत कबीला V/S 10 कबीले

राजा = सुदास

पुरोहित = वशिष्ठ पुरोहित = विश्वामित्र

- यह युद्ध रावी नदी के जल के लिए लड़ा गया था।

- आठवें मण्डल में घोशा, शिकता, अपाला, विश्वरा, काक्षावृति, लोपामुद्रा जैसी ऋषि महिलाओं के नाम मिलते हैं।
- 9वां मण्डल सोम को समर्पित है।
- सोम भुजवन्त पर्वत से मिलता है।
- 10वें मण्डल के पुरुष सूक्त में शुद्ध शब्द का उल्लेख / चारों वर्ण का उल्लेख मिलता है।
- 10वें मण्डल के नासदीय सूक्त में निर्गुण भक्ति का उल्लेख मिलता है।
- ऋग्वेद के मंत्रों को उच्चारण करने वाला ब्राह्मण = होतृ
- उपवेद = आयुर्वेद

2. यजुर्वेद :-

- यह 2 भागों में है - (i) शुक्ल यजुर्वेद (ii) कृष्ण यजुर्वेद
- यह गद्य एवं पद्य दोनों में है।
- इसमें शुद्ध का उल्लेख मिलता है।
- मंत्र पढ़ने वाले को "ऋध्वर्यु" कहा जाता है।

- यज्ञ - ऋग्वेदों की जानकारी मिलती है।
- उपवेद - धनुर्वेद

3. सामवेद :-

- संगीत का प्राचीनतम स्रोत
- वैदिक मन्त्रों के उच्चारण को बताया गया है जो उच्च स्वर में गाए जाते हैं।
- भगवान कृष्ण का प्रिय वेद
- मन्त्रों का उच्चारण करने वाला = उद्गाता
- उपवेद = गन्धर्ववेद

4. ऋग्वेद :-

- ऋथर्व ऋषि तथा ऋंगीरश ऋषि - रचयिता
- ऋथय नाम - ऋथर्वऋंगीरश वेद
- इसमें काले जादू, टोने - टोटको व चिकित्सा का उल्लेख।
- चाँदी का उल्लेख
- विविध विषय - श्रौषधि प्रयोग, शत्रुओं का दमन, रोग निवारण, तंत्र - मंत्र आदि।
- मंत्रों का उच्चारण करने वाला - ब्रह्म
- उपवेद - शिल्पवेद।

ब्राह्मण साहित्य

ऋग्वेद - 1. ऐतरेय ब्राह्मण
2. कोषीतकी (Raj. Board में इसे यजुर्वेद का ब्राह्मण)

यजुर्वेद - 1. शतपथ ब्राह्मण
2. ऐतरेय ब्राह्मण

सामवेद - 1. पंचवीश ब्राह्मण
2. षडवीश ब्राह्मण
3. जैमिनीय ब्राह्मण

ऋथर्ववेद 1. गोपथ ब्राह्मण

ऋथर्ववेद साहित्य -

- वनों में रचना हुई
- रहस्यात्मक एवं दार्शनिक रूप (ज्ञान) में लिखे गये।
- ज्ञान मार्ग प्रमुख

उपनिषद् साहित्य -

- इनकी संख्या 108 है।
- इसे वेदान्त भी कहा जाता है।
- उपनिषद् का शाब्दिक अर्थ गुरु के समीप निष्ठापूर्वक बैठना है।
- विषयवस्तु - रहस्यात्मक ज्ञान व दार्शनिक तत्व

प्रमुख उपनिषद् -

1. कठोपनिषद् = कठ + उपनिषद् → इसमें यम व नयिकेता का संवाद है। इसमें कर्मकाण्ड की श्रालोचना की गई है।
2. छान्दोग्य उपनिषद् -
 - इसमें भगवान कृष्ण का प्राचीनतम उल्लेख मिलता है।
 - भगवान श्रीकृष्ण को देवकी का पुत्र तथा ऋंगीरश ऋषि का शिष्य बताया है।
 - बौद्ध धर्म का पंचशील सिद्धान्त इसमें मिलता है।
3. वृहदारण्यक उपनिषद् -
 - शबरी लम्बा उपनिषद्
 - इसमें मार्गी व याज्ञवल्क्य का संवाद मिलता है।
4. जाबाल उपनिषद् -
 - चारों आश्रमों का उल्लेख मिलता है।
5. ऐतरेय उपनिषद् -
 - बौद्ध धर्म का ऋष्टांगिक मार्ग
6. मुण्डकोपनिषद् -
 - "सत्यमेव जयते"

वेद कर्म मार्ग - जेमिनि पूर्व मीमांसा दर्शन
ब्राह्मण प्रभाकर व कुमारिल भट्ट

ऋथर्ववेद ज्ञान मार्ग - बादरायण - उत्तर मीमांसा
दर्शन

उपनिषद् ब्राह्मण

- शंकराचार्य - ऋद्धैत
- रामानुज - विशिष्ट ऋद्धैत
- निम्बिकाचार्य - द्वैत - ऋद्धैत
- वल्लभाचार्य - शुद्ध ऋद्धैत
- माधवाचार्य - द्वैत

वेदांग

1. शिक्षा
2. ज्योतिष
3. व्याकरण
4. छन्द
5. निरुक्त
6. कल्प

शुल्वसुत्र

- इसमें यज्ञ वेदिकाओं को नापने का उल्लेख
- गणित व रेखागणित का प्रथम ग्रन्थ

पुराण - संख्या - 18

ऋषि लोमहर्ष एवं इनके पुत्र उग्रश्रवा ने संकलित किया।

- मत्स्य पुराण - सबसे प्राचीन एवं प्रामाणिक इसमें शातवाहन शासकों का उल्लेख, शुंगवंश का उल्लेख
- विष्णु पुराण - मौर्य वंश का उल्लेख
- वायु पुराण - गुप्त वंश का उल्लेख
- मार्कण्डेय पुराण - देवी महात्म्य - (इसका भाग दुर्गासप्तशती) महामृत्युंजय मंत्र

स्मृति साहित्य: -

मनुस्मृति: - प्राचीनतम स्मृति

- इसमें सामाजिक नियमों का उल्लेख किया गया है।
- जर्मन दार्शनिक नीत्शे कहता है। "बाइबिल को जला दो, मनुस्मृति को श्रपनाओ"
- शुंग व शातवाहन वंश के समय इसकी रचना हुई
टीकाकार = भारुची
कुल्लक भट्ट
मेघातिथी
गोविन्दराज

याज्ञवल्क्य स्मृति: - टीकाकार = विश्वरूप
विज्ञानेश्वर
श्रपराक

नारदस्मृति: - इसमें दासों की मुक्ति का उल्लेख किया गया है।

कात्यायन: - इसमें श्राथिक गतिविधियों का उल्लेख है।

ऋग्वेदिक काल
(1500 - 1000BC)

उत्तरवेदिक काल
(1000 - 600BC)

3. ऋग्वेदिक काल (1500 - 1000 BC)

• श्राय का शाब्दिक अर्थ - भद्रजन, श्रेष्ठ, उत्तम, कुलीन

• श्रायों का निवास स्थान -

(i) बाल गंगाधर तिलक -

"श्राकीक होम श्राफ वेदाज"

"गीता श्रस्य"
श्रायिक्रान / श्रायिक्रान

पुरतके

इस पुरतके मे उत्तरी ध्रुव को श्रायों का निवास स्थान बताया।

(ii) दयानन्द शरश्वती - तिब्बत को श्रायों का स्थान बताया।

(iii) डॉ. पेन्का - जर्मनी को बताया।

(iv) मेवत स्युलर - मध्य एशिया - बैक्ट्रिया

श्रायिक्रान मान्य मत

श्रायों का भौगोलिक विस्तार :-

- ऋग्वेद में सबसे ज्यादा सिन्धु नदी का उल्लेख मिलता है।
- शरश्वती सबसे पवित्र नदी थी। (देवीतमा, मातेतमा, नदीतमा)
- गंगा व शरश्वती का उल्लेख 1 - 1 बार "मुजवन्त"
- यमुना का उल्लेख 3 बार
- "भुजवन्त" नामक पहाड़ी चोटी का उल्लेख - जो कि हिमालय है।
- सोम का निवास स्थान - भुजवन्त
- पंजाब की नदियों का उल्लेख मिलता है।
झेलेम - वितस्ता, चिनाब - श्रिकनी, शतलज
शतुदी, व्यास - बिपाशा, शवी - पुरुषणी
- अफगानिस्तान की नदियों का उल्लेख

श्रायों की राजनैतिक स्थिति :-

- राजा का पद वंशानुगत नहीं होता था।
- राजा को गोप / जनस्य गोप कहा जाता था।
- राजा का पद गरिमामयी नहीं होता था।
- कालान्तर (ऋग्वेदिक काल का अन्तिम समय) में गोप का पद वंशानुगत हो गया था।
- राजा के पास स्थायी सेना नहीं होती थी।
- अधिकतर लडाईयाँ जानवरों (गायों व घोडा) के लिए लडी जाती थी।
- राजा की सहायता हेतु कुछ संस्थाएँ होती थी -

(1) विद्वध -

- प्राचीनतम संस्था
- यह धन का बँटवारा करती थी (लूट)

(2) सभा -

- वरिष्ठ एवं कुलीन लोगों का समूह
- ऋग्वेद में 8 बार इसका उल्लेख किया गया है।

(3) समिति -

- जनप्रतिनिधियों का समूह
- ऋग्वेद में 9 बार इसका उल्लेख किया है।
- स्पश = गुप्तचर
- राजा की सहायता हेतु 12 मंत्री होते थे जिन्हें रत्निन (रत्नि) कहा जाता था।
- ब्राजपति: - गोचर भूमि का प्रमुख
- बलि: - राजा को दिया जाने वाला स्वैच्छिक कर
- राजनैतिक इकाईयाँ -
 - (1) जन - गोप
 - (2) विश - विशपति
 - (3) ग्राम - ग्रामणी
 - (4) कुल - कुलुप
- महिलाएँ भी सभा में हिस्सा लेती थी।

आर्थिक जीवन -

- श्राय का स्रोत/ प्रमुख पेशा - पशुपालन
- गाय व घोडा - प्रिय पशु
- कृषि (स्थायी कृषि) नहीं करते थे। ऋग्वेद में कृषि का उल्लेख 3 बार मिलता है।
- मुद्रा प्रणाली नहीं। वस्तु विनिमय के माध्यम से व्यापार
- मुद्रा के रूप में गाय व निस्क का प्रयोग। (प्रासम्भ में श्राभूषण)
- श्रयस शब्द - शंभवतः तँबे या काँसे के लिए / लोहे से परिचित नहीं
- कपास का उल्लेख नहीं

सामाजिक जीवन

- पितृसत्तात्मक संयुक्त परिवार
- समाज 3 वर्गों में विभक्त - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य
- शुद्धों का अस्तित्व नहीं था।
- ऋग्वेद के 10वें मण्डल में पुरुष सूक्त में क्षुद्र शब्द का उल्लेख। लेकिन यह बाद में जोड़ा गया था।

- वर्ण व्यवस्था - कर्म आधारित अर्थात् व्यक्ति वर्ण बदल सकता था।
- महिलाओं को सभा व समिति में हिस्सा लेने का अधिकार था।
- महिलाओं को शिक्षा का अधिकार था।
- महिलाओं ने ऋग्वेद के कुछ मंत्रों का रचना भी की थी।
- कुछ विदुषी महिलाओं की जानकारी लोपामुद्रा, घोषा, शिकता, श्रपाला, विश्वरा, काक्षावृति
- "विषफला" नामक योद्धा महिला का उल्लेख।
- जो महिलाएँ श्रविवाहित होकर अध्ययन करती थी, उन्हें "श्रमाजु" कहा जाता था।
- बहुपत्नी प्रथा का प्रचलन।
- विधवा विवाह होता था।
- सती प्रथा, पर्दा प्रथा, बाल विवाह का प्रचलन नहीं था।
- "नियोग प्रथा" का प्रचलन था।
- दहेज को "वहनु" कहते थे।
- घरेलु दार होते थे।
- विशाट पुरुष के मुख से ब्राह्मण, क्षत्रिय भुजाओं से, वैश्य जाँघों से एवं शुद्र पैरों से उत्पन्न हुए हैं।
- श्रायों के वस्त्र सूत, ऊन एवं चर्म के बने होते हैं।
- भिषज शब्द का प्रयोग ऋग्वेद में वैद्य के लिए होता था।

धार्मिक जीवन :-

- श्राय बहुदेववाद में आस्था रखते थे। सर्वेश्वरवाद में भी आस्था रखते थे।
- मूर्तिपूजा नहीं करते थे।
- मन्दिरोँ के शाक्ष्य नहीं मिलते हैं।
- सबसे प्रमुख देवता - इन्द्र
- ऋग्वेद में 250 बार 'इन्द्र' का उल्लेख है। इन्द्र को "पुरन्दर" कहा।
- 'श्रमिन' दूसरा प्रमुख माना जाता था।
- श्रमिन को मध्यस्थ माना जाता था।
- वरुण - तीसरा प्रमुख देवता। वरुण को 'ऋत' का संरक्षक माना जाता है।
- ऋत - इस जगत् की भौतिक, नैतिक एवं कर्मकाण्डीय व्यवस्था को ऋत कहा गया है।
- पुषन - पशुओं के देवता को कहा जाता था। (पूषण)
- यज्ञ अनुष्ठान होते थे।

- धार्मिक कर्मकाण्डों का उद्देश्य भौतिक सुखों (पुत्र/पशु) की प्राप्ति करना था।
- गायत्री मंत्र ऋग्वेद के तीसरे मंडल में उल्लेख
- सोम का पेय पदार्थ को देवता माना। ऋग्वेद के 9वें मण्डल में।



हिमोधिज्म - किसी स्थान विशेष पर विशेष समय एवं परिस्थितियों के कोई एक देवता प्रमुख एवं अन्य देवी-देवता गौण हो जाते हैं।

मैवसमूलर

4. उत्तरवैदिक काल - 1000 - 600 BC

- महत्वपूर्ण स्त्रोत - यजुर्वेद, सामवेद, ऋथर्ववेद, ब्राह्मण, उपनिषद् व आरण्यक
- श्रार्य संस्कृति के प्रसार और विकास, उत्कर्ष, विभिन्नीकरण का युग
- लौह प्रौद्योगिकी युग की शुरुआत। ("चित्रित धूसर मृदभाण्ड")

राजनैतिक जीवन - राजतंत्रात्मक शासन व्यवस्था :-

- क्षेत्रगत साम्राज्यों का उदय प्रारम्भ।
- राजा का पद पहले की रूपरेखा अधिक गौरवशाली हो गया था।
- राजा का पद वंशानुगत हो गया था।
- ऐतरेय ब्राह्मण में राजा की विभिन्न उपाधियों का वर्णन मिलता है।
स्वराट, विराट, एकराट, सम्राट
- राजा की सहायता हेतु 12 रत्निन् होते थे।
- राजा यज्ञों का आयोजन करता था।
- (i) श्रथ्वमेघ यज्ञ - यह साम्राज्यवादी यज्ञ होता था। 3 दिन तक होता
- (ii) राजसूय यज्ञ - राज्याभिषेक के समय किया जाता था। इस दिन राजा हल चलाता था। अपने रत्निनों

का निमंत्रण स्वीकार कर, उनके घर भोजन करने जाता था।

- (iii) वाजपेयी यज्ञ - 2थ दौड़ का आयोजन करता था। राजा हिंसा लेता था व हमेशा जीतता था।

- राजा के पास स्थायी सेना नहीं होती थी।
- ऋग्वैदिक काल में राजा को दिया जाने वाला स्वैच्छिक कर, अब अनिवार्य हो गया, जिसे 'बली' कहा जाता था। (1/16वाँ भाग)
- विद्वत् का उल्लेख नहीं मिलता।
- सभा, एवं समिति का प्रभाव कम हो गया था।
- ऋथर्ववेद - सभा व समिति को प्रजापति की पुत्रियाँ कहा गया है।
- पांचाल - कबीला - प्रदेश - सर्वाधिक विकसित राज्य
- राजा की "दैवीय उत्पत्ति का सिद्धान्त" सर्वप्रथम ऐतरेय ब्राह्मण में मिलता है।

आर्थिक जीवन :-

- कृषि का विकास हो चुका था।
- ऋथर्ववेद में "पृथवेन्यु" को कृषि धरती पर लाने का श्रेय जाता है।
- ऋथर्ववेद में टिड्डियों का उल्लेख मिलता है।
- शतपथ ब्राह्मण में कृषि के सभी प्रकारों (जुताई, बुझाई, कटाई) का उल्लेख मिलता है।
- शतपथ ब्राह्मण की काठक संहिता में (24 बैलों द्वारा खिंचे जाने वाले) हल का वर्णन मिलता है।
- गेहूँ एवं जौ प्रमुख फसले थी।
- पशुपालन भी होता था।
- वस्तु विनिमय होता था।
- विनिमय में गाय व निरस्क का प्रयोग होता था। निरस्क - सोने का आभूषण जो गले में पहनते थे।
- अधिशेष उत्पादन होने लगा। (लौहा - खेत)
- जन उत्पादक वर्ग - ब्राह्मण व क्षत्रिय

उत्पादक वर्ग - वैश्य व शुद्र :-

- अधिशेष उत्पादन पर अधिकार को लेकर ब्राह्मणों व क्षत्रियों में संघर्ष हुआ। अंततः ब्राह्मणों को प्रतीकात्मक श्रेष्ठता प्रदान की गयी एवं अधिशेष उत्पादन पर क्षत्रियों का अधिकार हो गया।
- कृषि में लौह निर्मित उपकरणों का प्रयोग (अन्तरजीखेडा से साक्ष्य)

- समुद्र का ज्ञान हो गया था। साहित्य में पश्चिमी तथा पूर्वी दोनों प्रकार के समुद्रों को वर्णन मिलता है। व्यापार व वाणिज्य का संकेत
- स्वर्ण व लौहे के झलावा टिन, तांबा, चांदी व सीसा से भी परिचित हो गये थे।
- वस्त्र निर्माण और धातु शिल्प (धातु गलाने का काम) उद्योग बड़े पैमाने पर।

सामाजिक जीवन :-

- पितृशतात्मक संयुक्त परिवार
- चार वर्षों में समाज विभक्त हो गया था। किन्तु अस्पृश्यता का अभाव था।
- ब्राह्मणों को 'अदायी' कहा जाता था। आरम्भ के 3 वर्ग द्विज कहलाते थे। (जन्मेऊ धारण करते हैं) उपनयन संस्कार होता था। द्विज - दो बार जन्म लेने वाला
- क्षुद्रों को उपनयन संस्कार का अधिकार नहीं था।
- महिलाओं की स्थिति में गिरावट आयी। (वृहदारण्य उपनिषद् में याज्ञवल्क्य एवं गार्गी का संवाद मिलता है।)
- अथर्ववेद में पुत्री जन्म को दुःखदायी बताया है।
- ऐतरेय ब्राह्मण में भी पुत्री जन्म को दुःखदायी बताया है। (पुत्री - कृपण कहा)
- मैत्रायणी संहिता में भी पुत्री को शराब एवं जुआ की तरह बुराई बताया है।
- महिलाओं को शिक्षा का अधिकार था। EX - गार्गी, मैत्रेयी, वेदवती
- महिलाओं को सम्पत्ति का अधिकार था।
- विधवा विवाह का प्रचलन था हालाँकि समाज में इसे बुरा माना जाने लगा था।
- नियोग प्रथा का प्रचलन भी।
- सती प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा का प्रचलन नहीं था।
- घरेलू दासों का प्रयोग होता था।
- जाबालोपनिषद् में चारों आश्रमों का विवरण मिलता है।

धार्मिक स्थिति

- बहुदेववाद का प्रचलन था। सर्वेश्वरवाद में भी विश्वास रखते थे।
- मन्दिरों के शाक्य नहीं
- यज्ञ अनुष्ठान अत्यधिक जटिल हो गये थे केवल विद्वान ब्राह्मण एवं क्षत्रिय ही यज्ञ कर सकते थे।
- प्रमुख देवता - ब्रह्मा, विष्णु, महेश।

पाँच प्रकार के यज्ञ होते थे (पंचयज्ञ)।

- ब्रह्म यज्ञ
- देव यज्ञ
- अतिथि यज्ञ
- पितृ यज्ञ
- भूत यज्ञ

- ब्रह्म यज्ञ को "ऋषि यज्ञ", अतिथि यज्ञ को "मनुष्य यज्ञ" भी कहते थे। (भूत यज्ञ - प्राणी जगत् व प्रकृति के प्रति कृतज्ञता)

3 ऋण -

- ऋषि ऋण
- देव ऋण
- पितृ ऋण

- ब्राह्मणों के एक वर्ग ने इस जटिल कर्मकाण्डय व्यवस्था का विरोध - किया एवं ज्ञान पर विशेष बल दिया।

भौगोलिक स्थिति

- गंगा - यमुना दोआब में आर्य संस्कृति का प्रसार हुआ
- शतपथ ब्राह्मण - राजा विदेथ माधव ने पुरोहित गौतम राहुगुणा को साथ लिया एवं सदानिरा नदी तक के सभी जंगलों को (मुँह में अग्नि धारण की) जला दिया अनार्य शासक (मगध का) को "व्रात्य" कहा गया है इसका शुद्धिकरण करके इसको आर्य बनाया गया है
- भुजवंत के अतिरिक्त 3 अन्य पर्वतमालाओं का उल्लेख मिलता है।

5. बौद्ध धर्म

संस्थापक - गौतम बुद्ध

जन्म - 563 B. C.

पिता - शुद्धोधन

माता - महामाया

मौली - प्रजापति गौतमी

पत्नी - यशोधरा

पुत्र - राहुल

जन्मस्थान - लुम्बिनी (कपिलवस्तु)

आधुनिक - रूमिन देई, नेपाल

वंश - इक्ष्वाकु

शाक्य क्षत्रिय

गौत्र - गौतम

- कौण्डिनय ब्राह्मण ने भविष्यवाणी की कि सिद्धार्थ बड़ा होकर चक्रवर्ती सम्राट या शाहु बनेगा।

- 4 घटनाएँ जिन्होंने बुद्ध का जीवन बदल दिया -
 - (i) वृद्ध व्यक्ति
 - (ii) बीमार व्यक्ति
 - (iii) मृत व्यक्ति
 - (iv) शन्यासी
- 29 वर्ष की अवस्था में गृहत्याग किया यह घटना -- "महाभिनिष्क्रमण" कहलाती है।
- 'शालार कलाम' के आश्रम में रहकर सांख्य दर्शन का ज्ञान प्राप्त किया।
- "रामपुत्र" - दूसरे गुरु। (रुद्रक रामपुत्र)
- कौंडिन्य आदि ब्राह्मणों के साथ कठिन तपस्या की।
- "शुजाता" नामक लडकी ने बुद्ध को खीर खिलाई।
- बुद्ध ने "मध्यम मार्ग" का प्रतिपादन किया।
- बुद्ध उरुवेला चले गये एवं वहाँ निर्जना नदी के तट पर पीपल वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति हुई।
- जब सिद्धार्थ "गौतम बुद्ध व शाक्य मुनि" के नाम से प्रसिद्ध हुये।
- शारनाथ में कौंडिन्य एवं अन्य ब्राह्मणों को पहला उपदेश दिया इसे "धर्मचक्र प्रवर्तन" कहते हैं
- सर्वाधिक उपदेश - श्रावस्ती में दिये।
- ज्ञानन्द प्रिय शिष्य तथा उपालि प्रमुख शिष्य था।
- ज्ञानन्द के कहने पर भगवान बुद्ध ने महिलाओं को संघ में प्रवेश दिया। प्रजापति गौतमी - पहली 'भिक्षुणी'
- 483 B.C. में बुद्ध की मृत्यु - खुशीनारा में (कुशीनारा) कुशीनगर
- भगवान बुद्ध के प्रतीक -
 1. हाथी/ शफेद हाथी - भगवान बुद्ध के गर्भस्थ होने का प्रतीक
 2. सांड/कमल - जन्म
 3. घोडा - गृहत्याग का प्रतीक
 4. बोधिवृक्ष/पीपल - ज्ञान का प्रतीक
 5. पद्मिन्ह - निर्वाण का प्रतीक
 6. स्तूप - मृत्यु का प्रतीक
 7. महाभिनिष्क्रमण - 29 वर्ष की अवस्था में भगवान बुद्ध ने गृहत्याग किया
 8. शम्बोधि - 35 वर्ष की अवस्था में गौतम बुद्ध को बोधगया में निर्जना नदी के तट पर पीपल के वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति हुई।

ज्ञान/ दर्शन -

4 कार्य सत्य

- (i) दुःख है।
- (ii) दुःख का कारण है। (प्रतीत्य समुत्पाद)
- (iii) दुःख निवारण है।

(iv) दुःख निवारण का मार्ग है।

➤ अष्टांगिक मार्ग -

सम्यक् दृष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वाक्, सम्यक कर्मान्त, सम्यक् आजीव, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति, सम्यक् समाधि

➤ कार्य कारण/ कारणता सिद्धान्त - प्रतीत्य समुत्पाद :-

(ऐसा होने पर -वैशा होना)

(ऐसा होने पर -वैशा होना)

- दुःखो का कारण अविद्या को बताया है।
- कर्म सिद्धान्त में विश्वास रखते हैं।
- पुनर्जन्म में विश्वास रखते हैं।
- ज्ञानात्मवादी होते हैं। आत्म की अमरता में विश्वास नहीं रखते हैं।
- आत्मचेतना पर सर्वाधिक बल
- ज्ञानीश्वरवादी होते हैं। ईश्वर के प्रश्न पर बुद्ध मुस्कुरा देते थे।
- क्षणिकवाद (अनित्यवादी) - इस जगत की सभी वस्तुएँ अनित्य एवं परिवर्तनशील हैं।
- इनका दर्शन - क्षणिकवाद (अनित्यवादी)
- अश्रमपाली (वैशाली) भी बौद्ध संघ में सम्मिलित हो गयी थी।

ज्ञानात्मवाद -

- भगवान बुद्ध नित्य आत्मा को स्वीकार नहीं करते।
- बुद्ध के अनुसार - "विज्ञानों (विचार) का प्रवाह ही आत्मा है।"
- यह विज्ञान अनित्य/क्षणिक होते हैं।
- प्रत्येक विज्ञान मरने से पूर्व नए विज्ञान को जन्म देता है।
- विज्ञानों का पुनर्जन्म होता है।

निर्वाण -

- निर्वाण का शाब्दिक अर्थ "दीपक/विज्ञान का बुझ जाना" होता है।
- निर्वाण बौद्ध धर्म का अन्तिम लक्ष्य है।
- भगवान बुद्ध ने निर्वाण की अवस्था का उल्लेख नहीं किया है।
- भगवान बुद्ध ईश्वर, परमतत्व, निर्वाण जैसे प्रश्नों का उत्तर नहीं देते थे एवं मुस्कुरा दिया करते थे।
- बौद्ध धर्म ज्ञानीश्वरवादी धर्म है।

- बौद्ध धर्म कर्मफलवादी सिद्धान्त एवं पुनर्जन्म को मानता है ।
- भगवान बुद्ध श्रद्धेयवादी नहीं थे ।

❖ बौद्ध धर्म की चार संगीति -

समय	स्थान	शासक	श्रद्धयक्षी
1. 483 B. C.	राजगृह	श्रजातशत्रु	महाकश्यप
2. 383 B. C.	वैशाली	कालाशीक	शाबकमीर
3. 251 B. C.	पाटलीपुत्र	श्रशीक	मोगलीपुत्र तिश्क
4. 1 st Cent.	कुण्डलवन (कश्मीर)	कनिष्क	श्रश्वघोष / वसुमित्र

(1) प्रथम संगीति - दो पुस्तके (ग्रन्थ) लिखी गई ।

- शुत पिटक: - भगवान बुद्ध का जीवन, उपदेश, शिक्षाएँ, तथा बौद्ध धर्म की जानकारी मिलती है। इसके खुद्दक निकाय में बुद्ध के पूर्व जन्म की कथाएँ (जातक) मिलती हैं ।
- विनय पिटक - संघ के नियम तथा बौद्ध भिक्षुओं के आचार विचार (आचरण) का वर्णन मिलता है

(2) द्वितीय संगीति - बौद्ध धर्म 2 भागों में विभक्त हो गया ।

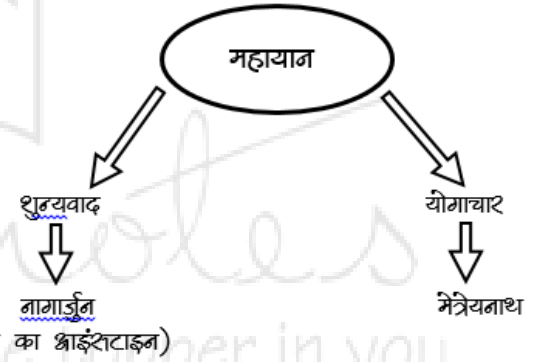
- स्थविर तथा महासांघिक - दो भागों में विभक्त ।

(3) तृतीय संगीति - इसमें तीसरे पिटक - अभिधम्म पिटक की रचना की गई । इसमें "बौद्ध धर्म के दर्शन" का वर्णन है संयुक्त रूप से शुत - विनय - अभिधम्म पिटक को "त्रिपिटक" कहा जाता है ।

(4) चतुर्थ संगीति - बौद्ध धर्म 2 भागों में विभक्त

हीनयान	महायान
1. रूढीवादी	1. सुधारवादी
2. बुद्ध को महापुरुष मानते हैं ।	2. भगवान बुद्ध को ईश्वर मानते हैं ।
3. देवी-देवताओं को नहीं मानते	3. देवी-देवताओं को मानते हैं । जैसे- प्रजा की देवी - तारा
4. मूर्तिपूजा नहीं करते ।	4. मूर्तिपूजा करते हैं ।

5. परमपद - अर्हत	5. परमपद - बोधिसत्व
6. व्यक्तिवादी	6. मनवतावादी
7. भाषा - पालि	7. भाषा - संस्कृत
8. श्रीलंका, बर्मा, म्यांमार, थायलैण्ड, कम्बोडिया, लाओस व वियतनाम	8. नेपाल, चीन, कोरिया, जापान



- अन्तिम लक्ष्य - निर्वाण = (अर्थ - बुझ जाना)
- मेत्रेय - भविष्य का बुद्ध

➤ बौद्ध धर्म का योगदान: -

- भगवान बुद्ध ने एक शरल एवं आडम्बरविहीन धर्म दिया ।
- भगवान बुद्ध ने धार्मिक आडम्बरो, कर्मकाण्ड, अन्धविश्वास, सामाजिक अस्मानता, वर्ण व्यवस्था का विरोध किया ।
- भगवान बुद्ध ने नैतिक नियमों पर अत्यधिक बल दिया ।
e. g. शत्य, अहिंसा
- बुद्ध ने पंचशील का सिद्धान्त दिया -
(i) झूठ नहीं बोलना
(ii) चोरी नहीं करना
(iii) हिंसा नहीं करना

(iv) नशा नहीं करना

(v) व्यभिचार नहीं करना

- भगवान बुद्ध ने मध्यम मार्ग का प्रतिपादन किया जो अत्यन्त ही व्यवहारिक है।

स्थापत्य कला में योगदान -

- बौद्ध धर्म ने स्थापत्य कला में योगदान दिया।
- चैत्य (कार्से, अजन्ता)
- विहार (बोधगया, शारनाथ)
- स्तूप (धमेख, साँची)

मूर्तिकला में योगदान -

- गान्धार, मथुरा व अमरावती मूर्तिकला शैलियों में भगवान बुद्ध से सम्बन्धित कई मूर्तियाँ बनीं।

चित्र -

- अजन्ता - ऐलोरा, बाघ आदि की गुफाओं से बौद्ध धर्म सम्बन्धित चित्र मिलते हैं।
- तक्षशिला एवं नालन्दा विश्वविद्यालय विकसित हुए जो शिक्षा के बड़े केन्द्र थे।
- बौद्ध धर्म की शिक्षा प्राप्त करने हेतु फाह्यान एवं हेन्सांग जैसे विदेशी यात्री भारत आए।
- उनके यात्रा वृत्तान्तों से भारत की ऐतिहासिक जानकारी मिलती है।
- बौद्ध धर्म के कारण भारतीय संस्कृति का प्रचार - प्रसार विदेशों में हुआ।
- भगवान बुद्ध ने आर्थिक सुधार किए एवं ब्याज का समर्थन किया।

बौद्ध धर्म के पतन के कारण : -

1. बौद्ध धर्म (संघ) अनेकानेक शाखाओं में विभाजित हो गया एवं उनमें आपसी फूट पड़ गई।
2. बौद्ध संघ धन का केन्द्र बन गए जिससे सन्तों के जीवन में नैतिक पतन हुआ।
3. कालान्तर में बौद्ध धर्म में कालचक्रान व वज्रयान जैसी शाखाओं का उद्भव हुआ। यह क्रियावादी शाखाएँ थी जो जादू, टोने - टोटके, माँस - मदिरा व मैथुन में विश्वास करते थे।
4. बौद्ध धर्म ने हिन्दू कूप्रथाओं को अज्ञानता में डाल दिया।
5. ब्राह्मणों ने अपने धर्म में सुधारवादी आन्दोलन चलाया।
6. कुमारिल भट्ट एवं शंकराचार्य ने बौद्ध भिक्षुओं को शास्त्रार्थ में पराजित किया।
7. कालान्तर में सामन्तों का उदय हुआ। सामन्त अहिंसा जैसी नीतियों को नहीं मानते थे।

8. राजकीय संरक्षण का अभाव

9. तुर्क आक्रमण

10. तुर्क सेनापति कुतुबुद्दीन खिलजी ने नालन्दा एवं विक्रमशिला विश्वविद्यालयों को जलाकर नष्ट कर दिया था।

6. जैन धर्म

- संस्थापक - ऋषभदेव / आदिनाथ दोनों का वर्णन ऋग्वेद में
- 21वें तीर्थंकर - नेमीनाथ
- 22वें तीर्थंकर - ऋषभदेव - (कृष्ण के समकालीन)
- 23वें तीर्थंकर - पार्श्वनाथ
- ऐतिहासिक स्रोतों से जानकारी मिलती है।
- पिता - अश्वसेन
- जन्मस्थान - बनारस
- समेद पर्वत पर ज्ञान प्राप्त हुई।
- चार व्रत दिये।
 - (i) सत्य
 - (ii) अहिंसा
 - (iii) अश्लेष (चोरी न करना)
 - (iv) अपरिग्रह (धन इकट्ठा न करना)
 - (v) ब्रह्मचर्य (ये महावीर स्वामी ने दिया)
- महावीर स्वामी (24वें)
 - जन्म - 540 B.C. भाई - मन्दीबर्मन
 - स्थान - कुण्डग्राम
 - मृत्यु - पावापुरी (बिहार)
 - बचपन का नाम - वर्धमान
 - पिता - शिद्धार्थ
 - माता - त्रिशला
 - पत्नी - यशोदा
 - पुत्री - प्रियदर्शना दामाद - जामालि
- 30 वर्ष में गृहत्याग। वर्धमान ने रथ पर सवार होकर गाजे बाजे सहित घर छोड़ा।
- 13 माह पश्चात् वस्त्र त्याग भद्रनाहु की पुस्तक कल्प सूत्र से जानकारी मिलती है।
- 12 वर्ष की तपस्या के पश्चात् ज्ञान प्राप्त।
- जुम्बिकाग्राम में रिजुपालिका/ऋजुपालिका नदी के किनारे पर शाल वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति
- प्रथम शिष्य - जामालि।
- जामालि ने ही प्रथम विद्रोह किया।
- आरम्भिक 11 शिष्यों को "गणधर" कहा जाता है।

- ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् महावीर व जिन (विजेता) कहलाये ।
- इन्होंने त्रिरत्न की श्रवधारणा दी
 - (i) सम्यक् ज्ञान
 - (ii) सम्यक् दर्शन
 - (iii) सम्यक् चरित्र
- पंचव्रत - महाव्रत (भिक्षुओं के लिए)

 अणुव्रत (गृहस्थों के लिए)
- ज्ञान के 5 प्रकार बताये ।
 - (i) मति - पशुओं को भी यह ज्ञान होता है ।

 इन्द्रियों जनित ज्ञान
 - (ii) श्रुति ज्ञान - श्रवण ज्ञान
 - (iii) श्रवधि ज्ञान - दिव्य ज्ञान
 - (iv) मनः पर्यय ज्ञान - दूसरे के मन को जान लेना
 - (v) कैवल्य ज्ञान - सर्वोच्च ज्ञान ।
- कर्म सिद्धान्त (कर्म फल) तथा पुनर्जन्म में विश्वास रखते हैं ।
- आत्मा को जीव कहते हैं ।
- पृद्गल- जड पदार्थ को कहा है ।
- बन्धन - पृद्गल जब जीव से चिपकते हैं, तब जीव बंधन में पड जाता है ।
- आश्रय - पृद्गलो का जीव की तरफ प्रवाहित होना ।
- संवर - जीव की तरफ पृद्गलो के होने वाले प्रवाह का रूक जाना ।
- निर्जरा - जीव से चिपके हुए पृद्गलों का झड जाना ।
- मुक्ति - मोक्षा को मुक्ति कहा गया है ।

अनन्त चतुष्टय :-

- I. अनन्त ज्ञान
- II. अनन्त दर्शन
- III. अनन्त वीर्य (बल)
- IV. अनन्त आनंद

त्रिरत्न - सम्यक् ज्ञान, सम्यक दर्शन, सम्यक चरित्र

अनेकान्तवाद :-

- यह जैन दर्शन का तत्वमीमांसीय सिद्धान्त है ।
- इस जगत में अनेक वस्तुएँ हैं एवं प्रत्येक वस्तु में अनेक गुण हैं ।

- इनमें से कुछ गुण नित्य होते हैं एवं कुछ गुण परिवर्तनशील होते हैं ।

स्यादवाद :-

- यह जैन दर्शन का ज्ञान मीमांसीय सिद्धान्त है ।
- जैन दर्शन के अनुसार इस जगत में अनेक वस्तुएँ हैं एवं प्रत्येक वस्तु में अनेक गुण हैं ।
- हमारी बुद्धि न तो जगत की सभी वस्तुओं को पहचान सकती है एवं न ही एक वस्तु के सभी गुणों को पहचान सकती है, यह बुद्धि की सापेक्षता का सिद्धान्त है ।
- हमारा ज्ञान शदैव देश, काल, परिस्थिति के सापेक्ष होता है ।
- जैन धर्म में इसे सात जन्मान्ध के उदाहरण द्वारा समझाया गया है ।
 - जैन धर्म कर्मफल एवं पुनर्जन्म में विश्वास करता है ।
 - जैन धर्म के अनुसार प्रत्येक वस्तु में आत्मा होती है ।

जैन संगीति :-

समय	298 BC
शासक	चन्द्रगुप्त मौर्य
स्थान	पाटलिपुत्र
अध्यक्ष	स्थलबाहु व भद्रबाहु (स्थूलभद्र)
	- जैन धर्म दो भागों में विभक्त हो गया ।
	- स्थलबाहु के अनुयायी-श्वेताम्बर (तेरापंधी)
	- भद्रबाहु के अनुयायी - दिगम्बर (समैया)

1. 512 ई. वल्लभी (गुजरात) देवार्धि क्षमा श्रमण

प्रथम संगीति :-

- जैन धर्म दो शाखाओं में विभाजित हो गया -

जैन

दिगम्बर

1. भद्रबाहु के श्रनुयायी
2. रूढीवादी
3. मोक्षा प्राप्ति हेतु वस्त्र त्यागना आवश्यक है।
4. महिलाओं को इस जीवन में मोक्षा सम्भव नहीं है।
5. भगवान महावीर श्रविवाहित थे
6. श्रामगम शाहित्य को प्रामाणिक नहीं मानते

श्वेताम्बर

1. श्थूलभद्र के श्रनुयायी
2. शुधारवादी
3. मोक्षा प्राप्ति हेतु वस्त्र त्यागना आवश्यक नहीं है।
4. महिलाओं को इस जीवन में मोक्षा सम्भव है।
5. भगवान महावीर विवाहित थे।
6. 96 श्रामगम को प्रामाणिक मानते हैं।

दिगम्बर

वीरपंधी

तारापंधी

थेरापंधी

श्वेताम्बर

पूजेरा/मन्दिरमार्गी

ढंढिरा/स्थानकवासी

थेरापंधी

द्वितीय बौद्ध संगीति :-

- श्रामगम शाहित्य का संकलन किया गया।

जैन धर्म का योगदान :-

- जैनों एक सरल एवं श्राडम्बरविहीन धर्म दिया।
- जैनों ने धार्मिक श्राडम्बरों, कर्मकाण्ड, श्रन्धविश्वारों, वर्ण व्यवस्था श्रादि का विशेष किया।
- जैनों ने नैतिक मूल्यों पर श्रत्यधिक बल दिया।
जैने - शत्य, श्रहिंशा
जिससे समाज का नैतिक उत्थान हुआ
- जैनों ने श्यादवाद जैसा व्यावहारिक दर्शन दिया।

स्थापत्य कला में योगदान :-

- I. गंगशासक चामुण्डराय ने श्रवणबेलगोल में बाहुबली की मूर्ति का निर्माण करवाया।
- II. रणकपुर एवं देलवाडा में सुन्दर मन्दिरों का निर्माण करवाया गया।
- III. मथुरा एवं श्रमशवती शैलियों में जैन धर्म से संबंधित मूर्तियों का निर्माण करवाया।

IV. बाघ व एलोरा की गुफाओं से जैन धर्म से संबंधित चित्र मिलते हैं।

- जैनों ने शिक्षा के केन्द्रों को विकसित किया जिन्हें "उपासरा" कहा जाता है।
- जैनों ने श्रार्थिक शुधार किये जिससे श्रर्थव्यवस्था विकसित हुई।

पतन के कारण :-

- I. श्रात्मापीडन, कठोर व्रत व तपस्या पर बल
- II. श्रंहिंशा पर श्रत्यधिक बल के कारण लोग नियम धारण नहीं कर पाते।
- III. श्रत्यधिक कलिष्टता (श्यादवाद, श्रनेकांतवाद, द्वैतवादी तत्वज्ञान श्रादि को श्रमझना जन साधारण के लिए कठिन) परिणामस्वरूप जैन धर्म तपस्वियों तक ही सीमित रहा।
- IV. जैन मतावलम्बियों में श्रांतरिक मतभेद-श्वेताम्बर व दिगम्बर
- V. बाद में जैन शाहित्य संस्कृत में लिखा गया, जिससे साधारण जनों के लिए श्रमझना मुश्किल, श्रतः धर्म के प्रति दृष्टिकोण उदासीन होता चला गया।
- VI. प्रारम्भ में राजकीय श्राश्रय किन्तु बाद में नहीं।
- VII. धर्म प्रसार-श्रच्छे प्रचारको की श्रावश्यकता। कालांतर में इसका श्रभाव।
- VIII. बौद्ध धर्म का विस्तार व ब्राह्मण धर्म का पुनरुत्थान।

संधारा प्रथा :-

जब किसी व्यक्ति को लगता है कि वो मृत्यु के निकट है तो वह एकांतवास धारण कर लेता है श्रौर श्रन्न जल त्याग देता है। मौन व्रत धारण कर लेता है तथा श्रन्त में देहत्याग देता है।

Raj High Court में 2015 में रोक लगाई किन्तु Supreme Court ने इस निर्णय पर श्रंतरिम रोक लगा दी।

श्राजीवक सम्प्रदाय

- संस्थापक - मकखली पुत्र गौशाल
- भाम्यवादी थे।

जैन व बौद्ध धर्म में समानताएँ :-

- दोनों श्रनीश्वरवादी दर्शन हैं।
- दोनों नाश्रितक दर्शन हैं।
- वेदों को श्रवीकार नहीं करते हैं।
- दोनों कर्मफल श्रिद्धान्त एवं पुनर्जन्म को मानते हैं।